ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-2* March- 2020
Innovation The Research Concept

महात्मा गाँधी के आर्थिक चिंतन की वर्तमान समय में प्रासंगिता

Relevance of Mahatma Gandhi's Economic Thinking in Present Scenario

Paper Submission: 20 /04/2020, Date of Acceptance: 23/04/2020, Date of Publication: 28/04/2020

हरि राम मीना
सहायक प्रोफेसर,
अर्थशास्त्र विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय,
दौसा, राजस्थाान, भारत

सारांश

महात्मा गांधी का कथन है– 'मैं यह नहीं चाहता कि मेर घर को ऊंची चारदीवारों से घेर दिया जाये और खिड़कियों को मजबूती से बंद कर दिया जाये, मैं चाहता हूं कि सभी संस्कृतियों का प्रवाह मुक्त रूप से मेरे घर में हो परंतु मैं उस प्रवाह में उखड़ने से इनकार करता हूं'। गांधीवादी दर्शन जीवन के विभिन्न पहलुओं के लिए शक्ति एवं प्रेरणा का निरंतर बहने वाला एक ऐसा स्रोत्र है, जो शताब्दियों तक प्रकाश स्तंभ के रूप में बना रहेगा। बल्कि वैश्विक गांव एवं बाजार आधारित अर्थव्यवस्था के इस दौर में गांधीवाद की प्रासंगिकता और बढ़ गयी है। गांधीजी का जन्म भारत में, उच्च शिक्षा इंग्लैंड में तथा राजनैतिक संघर्ष की दीक्षा दक्षिण अफ्रीका में हुई और अपने समस्त अनुभवों का प्रयोग भारत को आजाद कराने में किया। वैश्वीकरण की उपज होने के कारण गांधी जी स्वयं इसके नफे–नुकसान से भली भांति परिचित थे। वैश्वीकरण को प्राचीन घटना मानते हुए वे आश्वस्त थे कि विभिन्न संस्कृतियों के संश्लेषण से भारतीय संस्कृति को कोई खतरा नहीं है। समाज को अपनी अधिकतम आवश्यकताओं के लिए आत्मनिर्भर एवं न्यूनतम हेतु परस्पर निर्भर होना चाहिए। गांधीजी का यह कथन आज भी समीचीन है कि 'इस संसार में हमारी जरूरत के लिए पर्याप्त संसाधन उपलब्ध है, परंतु हमारे लालच के लिए नहीं'। गांधी जी अपने आर्थिक विचारों में जॉन रस्किन से अधिक प्रभावित थे। उन्हा जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन टू दिस लास्ट' का 'सर्वोदय' के नाम से अनुवाद किया और यही पुस्तक उनके आर्थिक सिद्धांत की आधारशिला है।

Mahatma Gandhi's statement- 'I do not want my house to be surrounded by high walls and the windows should be firmly closed, I want all cultures to flow freely in my house but I will not allow that flow I refuse to uproot '. Gandhian philosophy is a source of continuous flow of power and inspiration for various aspects of life, which will remain as a lighthouse for centuries. Rather, the relevance of Gandhism has increased in this era of global village and market based economy. Gandhiji was born in India, higher education in England and political struggle was initiated in South Africa and used all his experiences to liberate India. Being a product of globalization, Gandhiji himself was well aware of its pros and cons. They were convinced that globalization is not a threat to Indian culture due to synthesis of different cultures. Society should be self-sufficient for its maximum needs and interdependent for minimum. Gandhiji's statement is still prevalent today that 'in this world there is enough resources available for our needs, but not for our greed'. Gandhi was more influenced by John Ruskin in his economic ideas. He translated John Un Ruskin's book 'Un to this last' as 'Sarvodaya' and this book is the cornerstone of his economic theory.

मुख्य शब्द : वैश्विक गांव, पूंजीवाद, साम्यवाद, अर्थनीतिक, समाजवाद, आर्थिक सिद्धांत, उत्कृष्टतम, भौतिक आवश्कताओ, कुटीर उधोगों, आर्थिक कार्यक्रम, आत्मनिर्भर, आर्थिक विकास, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, स्वावलंबन, सामाजिक चेतना, धर्म।

Keywords: Global Village, Capitalism, Communism, Economic, Socialism, Economic Theory, Superlative, Material Needs, Cottage Industries, Economic Programs, Self-Reliance, Economic Development, Sarvodaya, Satyagraha, Khadi, Village Industries, Self-Reliance, Social Consciousness, Religion.

प्रस्तावना

गांधी जी के जीवन का आदर्श है 'सरल जीवन और उच्च विचार'। वे गैर जरुरी आवश्यकताओं की वृद्धि के विरुद्ध हैं। उनका कथन है, जिस क्षण मनुष्य अपनी दैनिक आवश्कताओं में वृद्धि करना चाहता है, उसी क्षण वह अपनी कामनाओं का दास बन जाता है। मनुष्य अपना निकृष्टतम शत्रु भी बन सकता है और उत्कृष्टतम मित्र भी । उनका कहना है कि मानव शरीर का एकमात्र उद्देश्य सेवा है, भोग कदापि नहीं। सुखी जीवन का रहस्य त्याग में है। त्याग ही जीवन है। भोग का अर्थ तो मृत्यु है। जीवन की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरा करना मनुष्य का कर्तव्य है, परंतु भौतिक आवश्कताओ की वृद्धि करते जाना और उन्हें प्राप्त करने में समाज के अन्य प्राणियों का अहित करना, यह कदापि नहीं होना चाहिए। 'समाज का अधिकतम कल्याण' यह ध्यान में रखते हुए भौतिक आवश्यकताओं की वृद्धि पर अंकुश लगाना चाहिए। 6 मार्च, 1931 के 'यंग इंडिया' में अपने विचारों को स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं ''मैं स्वराज्य की प्राप्ति के लिए कार्य कर रहा हूँ, उन करोड़ों बेरोजगारों और मेहनतकश लोगों के लिए, जिन्हें दो जून का खाना भी नसीब नहीं हो पा रहा और नमक के साथ रोटी खाकर गुजारा कर रहे हैं। 'गांधी जी ने खेतों में काम करने वाले कृषि मजदूरों ,कामगारों तथा उपेक्षित गाँव वासियों की दशा सुधारने के लिए विभिन्न कुटीर उधोगों तथा आर्थिक कार्यक्रम को बढ़ावा देने की बात कही। गांधी जी का आर्थिक उत्थान पर आधारित चिंतन उनके शब्दों में ''स्वतंत्रता नीचे से प्रारंभ होनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाँव का एक गणराज्य अथवा पंचायत का राज्य होगा । उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी । इसके लिए प्रत्येक गाँव को आत्मनिर्भर होना होगा। अपनी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी करनी होगी, ताकि वह अपना पूरा प्रबंध स्वयं कर सके। स्वदेशी और ग्राम उधोग गांधी जी की आर्थिक क्रांति के ध्वज थे। उनका कथन है '', के लिए प्रकृति में निहित जीवन के नियमों का पालन करना चाहिए। यह पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है, लेकिन मनुष्य को लोभ को नहीं।

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचार

महात्मा गाँधी समाज–जीवन के हर विषय पर अपने विचार रखते है, सर्वोदय, सत्याग्रह, खादी, ग्रामोद्योग, महिला शिक्षा, अस्पृश्यता, स्वावलंबन एवं सामाजिक चेतना, धर्म, अध्यात्मक, ईश्वर, नैतिक मूल्य, आर्थिक जीवन आदि पर उनके विचार बहुत्तायत में मिलते हैद्य हम विकास के पथ पर कितने भी आगे क्यों न बढ़ जाएँ किंतु गांधी के सिद्धांतों एवं उनके दर्शन को नकारना असंभव है। गांधी जी का मानवाधिकारवादी दर्शन, स्त्री विमर्श, जल संकट, पर्यावरण, सतत विकास , उदारवादी, भूमंडलीकरण , स्वदेशी के संदर्भ में अनुकरणीय विचार रहे हैद्य सादा जीवन और उच्च विचार पर विश्वास करते थे। वह सदैव मानते थे कि स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना चाहिए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना चाहिए जब व्यक्ति स्वदेशी वस्तुओं को अपनाएगा तभी उसमे देशभक्ति की भावना जागतृ होगी। गाँधी जी का जीवन बहुआयामी थाद्य मानवीय जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जिस पर गाँधी जी ने अपने विचारो की छाप नहीं छोड़ी हो, चिंतन न किया हो। लोकतंत्रा से लेकर ग्रामदृस्वराज्य, नशामुक्ति, शिक्षा,बेरोजगारी,अराजकता, आर्थिक, सामाजिक जैसे प्रत्येक पहलू पर गहन अध्ययन और चिंतन करके व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए। वे एक समाज सुधारक, दार्शनिक, विचारक,अर्थशास्त्री थे। उन्होंने अर्थशास्त्र से संबंधित एक आधारभूत सिद्धांत दिया कि सच्चा अर्थशास्त्र कभी भी उच्चतम नैतिक मापदंड के विरुद्ध नहीं जा सकता। अर्थशास्त्र को न्याय भावना से पूर्ण होना चाहिए यदि वह न्याय भावना से पूर्ण है और उसे श्रेष्ठ अर्थशास्त्र के नैतिक आधार पर प्रतिष्ठित कर दिया तो आधुनिक युग की अनेक समस्याओं एंव दोषों को दूर किया जा सकता है। गांधी जी का मत है कि अमीर अपना अनावश्यक परिग्रह छोड़े तो गरीब को अपनी आवश्यक चीज आसानी से मिल जाए उपयोगितावाद के सिद्धांत को नकारते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि समाज मे वास्तविक खुशी तभी हासिल की जा सकती है, जब पंक्ति में बैठे आखिरी व्यक्ति का भी कल्याण हो सके द्य सर्वेदय अर्थात् सबका उदय, सबका उत्कर्ष, सबका विकास हो। गांधी जी का सर्वोदय का विचार मानव सभ्यता के लिए प्रकाश स्तंभ है। आर्थिक समानता उत्पादन एवं वितरण का विकेंद्रीकरण को उचित स्थान देते हैं और वे यह भी मानते है कि महत्वपूर्ण वास्तुओ के उत्पादन एवं वितरण की पद्धतियों का राजनैतिक एवं सामाजिक संस्थाओं पर प्रबल प्रभाव पड़ता है। इसलिए उन्होंने ऐसी आर्थिक व्यवस्था का विस्तृत प्रतिपादन किया जो उत्पादन की पूंजीवादी पद्धति को समाप्त कर सकती है। वे कहते है कि उत्पादन के उपकरण सबको उसी प्रकार सुलभ होने चाहिए जिस प्रकार वायु या जल सबको सुलभ हैं । उनका कथन है राष्ट्र की सारी संपत्ति पर राष्ट्र का हक है और उसी के हितार्थ उसका उपयोग होना आवश्यक है मैं यह चाहता हूँ कि वे जमींदार और राजा – महाराजा अपने लाभ और संपत्ति के बावजूद उन लोगों के समकक्ष बन जाएँ, जो मेहनत करके रोटी कमाते हैं। मजदूरों को भी महसूस कराना होगा कि मजदूर का काम करने की शक्ति पर जितना अधिकार है, मालदार आदमी का अपनी संपत्ति पर उससे भी कम है। आर्थिक समानता अहिंसापूर्ण स्वराज्य की मुख्यचाबी है। आर्थिक समानता का अर्थ है सबके पास समान संपत्ति का होना यानि सबके पास इतनी संपत्ति होना, जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताएँ पूरी कर सके। आर्थिक समानता के लिए काम करने का अर्थ है – जिन मुट्ठी भर पैसे वाले लोगों के हाथ में राष्ट्र की संपत्ति का बड़ा भाग इकट्ठा हो गया है उनकी संपत्ति को कम करना और दूसरी ओर से जो करोड़ों लोग आधे भूखे और नंगे रहते हैं, उनकी संपत्ति में वृद्धि करना। जब तक मुट्ठी भर धनवानों और करोड़ों भूखे रहने वालों के बीच बेहद अंतर बना रहेगा, तब तक अहिंसा की बुनियाद पर चलने वाली राज्य –व्यवस्था नहीं हो सकती। गांधी जी ऐसी अर्थनीति चाहते हैं जिसमें कार्य का समान अवसर प्रदत्त होने के कारण जनता में उत्पादन का न्यायोचित वितरण हो जिसमे व्यक्ति एवं परिवार अपनी जीविका पर समुचित नियंत्राण रख सके। जो मानव व्यक्तित्व के विकास के अनुकूल स्थिति की सृष्टि करे।

इसी सिद्धांत पर गांधी जी का न्यासधारिता का सिद्धांत आधारित है। न्यासधारिता के सिद्धांत के अनुसार संपत्ति का वास्तविक स्वामी समाज है कोई व्यक्ति विशेष नहीं क्योकीं सामाजिक व्यवस्था बने रहने से तथा संपूर्ण समाज के क्रियाकलापों से ही संपत्ति उत्पन्न होती है और उसमें वृद्धि होती है। अतः भूमिपति और पूंजीपति क्रमशः भूमि और पूंजी के वास्तविक स्वामी नहीं हैं। उन्हें स्वयं को संपत्ति का स्वामी न समझकर उसका केवल न्यासधारी समझना चाहिए। संपत्ति से उत्पन्न होने वाले धन का उतना ही भाग उन्हें ग्रहण करना चाहिए जितना उनकी मूलभूत आवश्कताओं की पूर्ति के लिए पयार्प्त हो शेष सभी धन उन्हें परिश्रम करने वाल किसानों मजदूरों एवं कामगारों के लिए उपलब्ध करा देना चाहिए। यदि संपत्ति – स्वामी आवश्यकता से अधिक धन अपने लिए रखते हैं तो वे ठीक वैसा ही अपराध करते है जैसाकि न्यासधारी न्यास की सपंत्ति हड़पने पर करते हैं। गांधी जी द्वारा प्रतिपादित न्यासधारिता का सिद्धांत कार्ल मार्क्स के वर्ग – संघर्ष के सिद्धांत से बिल्कुल भिन्न है। गांधी जी के अनुसार समाज को शोषक और शोषित दो वर्गों में विभक्त करना अनुचित है क्योंकि संपूर्ण समाज के हित एक से ही होते हैं। अतः समस्त समाज के हितों की सिद्धि के लिए उसके सभी वर्गों में सहयोग होना वांछनीय है। समाज के विभिन्न वर्गों में सहयोग का आधार न्यासधारिता का सिद्धांत ही हो सकता है।

महात्मा गांधी और पूंजीवादी अर्थव्यवस्था

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का लक्ष्य होता है अधिक से अधिक उत्पादन तथा अधिक से अधिक लाभांश, अतिरिक्त मूल्य को हड़पना। पूंजीवाद में यंत्रीकरण तथा केंद्रीकरणके द्वारा उत्पादन किया जाता है। यंत्रों की सहायता से उत्पादन कुछ पूंजीपतियों के हाथ में केंद्रित हो जाता है। जो उत्पादन सहस्त्रों मनुष्यों को काम दे सकता था, उन्हें लाभ पहुँचा सकता था, उसके लाभांश का अधिकारी एक वर्ग विशेष बन जाता है, जिसके पास सारी पूंजीएकत्रा हो जाती है और सहस्त्रों मनुष्य बेरोजगार हो जाते हैं। यह हिंसा है। जो लोग यंत्रों के संचालन का कार्यकरते हैं उन्हें भी निश्चित वेतन नहीं दिया जाता है, फलतः उनको भी उनके श्रम का पूरा पारितोषिक नहीं दिया जाता उनका भी शोषण किया जाता है। उत्पन्न सामग्री की खपत हेतु बिक्री केद्रों और बाजारों की खोज की जाती है। इसके लिए शक्ति बल और पशुबल का प्रयोग किया जाता है और निर्बल देशों को परास्त करके उन पर शासन करने की युक्ति थोपी जाती है। इस प्रकार धन और सत्ता को कुछ मुट्ठी भर मनुष्य हथिया कर बैठ जाते हैं यह शोषण है अन्याय है और सामाजिक अधर्म । गांधी जी श्रम को महत्व देते हैं। गांधी जी ने श्रम के महत्व का मूल सिद्धांत गीता से प्राप्त किया। गीता के तृतीय अध्याय में कहा गया कि जो बिना यज्ञ किए भोजन करता है वह चुराया हुआ अन्न खाता है –इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभावितः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुड्.क्ते स्तेन एव सः। गांधी जी का कहना है कि यहाँ यज्ञ का अर्थ केवल जीविकार्थ श्रम ही हो सकता है। जब प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह सामंत हो, पूंजीपति हो, किसान हो या मजदूर, जीविकार्थ श्रम का दायित्व स्वीकार कर लेगा तब वर्गो का विद्वेषजन्य विभेद नष्ट हो जाएगा। गांधीजी का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्कताओं का संयमन करना चाहिए ताकि उसके द्वारा अर्जित पदार्थ समाज के अन्य व्यक्तियों को भी दिए जा सकें। अतएव वह शारीरिक श्रम करना आवश्यक बताते हैं। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति स्वावलंबी होकर अपना एवं समाज का हित कर सकता है। पूंजी एक वर्ग विशेष के पास केंद्रित हो गई गांधी जी ने इस समस्या को समझा और समाधान रूप में चरखे पर आधारित समाज–व्यवस्था की अवधारणा की जो विकेंद्रीकृत आर्थिक संगठन का प्रतीक है जो पूंजीवादी शोषण की समाप्ति व्यक्तिगत स्वतंत्राता की संरक्षा एवं बेरोजगारी का उन्मूलन करने में समर्थ है। सन् 1940 में गांधी जी ने घोषणा की यदि मैं अपने दृष्टिकोण से देश को सहमत कर सका तो भावी समाज – व्यवस्था मुख्यतः चरखे और उसके आनुषंगिक तत्वों पर आधारित होगी। चरखा पिछड़ेपन का प्रतीक है इस गलत फहमी को दूर करने के लिए उन्होंने कहा ग्रामों का कल्याण करने वाले समस्त तत्व इसके अंतर्गत होंगे ग्रामीण हस्तशिल्पों के साथ ही साथ विद्युत पोत निर्माण, लौह उद्योग यंत्रा निर्माण आदि की अवस्थिति की भी मैं कल्पना करता हूँ। किंतु निर्भरता का क्रम उलट दिया जायेगा। अब तक औद्योगीकरण की योजना ग्रामीण शिल्पों के विनाशार्थ की गयी है भावी राज्यों में ये ग्रामों एवं उनके शिल्पों के उपकारक होंगे। मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताएँ हैं दृ भोजन,वस्त्रा एवं मकान गांधी जी की इच्छा थी कि इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जनता अधिक से अधिक आत्मनिर्भर हो, यद्यपि स्वदेशी की चेतना का उद्भव विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के परिणामस्वरूप हुआ और इसी के मूर्त रूप में चरखे का देशव्यापी प्रचार किया गया तथापि बाद में चरखा गांधी जी के समस्त कार्यक्रमों का केंद्र एवं उनके समग्र दर्शन का प्रतीक बन गया।

महात्मा गाँधी और ग्रामीण लघु कुटीर उद्योग

गांधी जी जान गए थे कि विदेशी यंत्रों के आक्रमण के कारण कुटीर उद्योग का विनाश ही भारतीयों की गरीबी का सबसे बड़ा कारण है। उन्होंने हिंद स्वराज में लिखा है जब मैंने श्रीदत्त की इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया पढ़ी मैं रोया था और अब भी जब मैं उसको याद करता हूँ मेरा दिल दुखी हो जाता है यंत्रों ने ही भारत को गरीब बना दिया। मैनचेस्टर ने हमारी कितनी क्षति की है इसका अनुमान कर पाना कठिन है। मैनचेस्टर के कारण ही भारतीय हस्तशिल्प विलुप्त प्राय हो गया। गांधी जी का विचार था कि आर्थिक गुलामी और पिछड़ेपन से मुक्ति तभी मिल सकती है जब गांवों में रहने वाले लाखों लोगों का आथिर्क पुनरूत्थान हो इस नीति के तहत उन्होंने ग्रामीण लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास पर बल दिया ताकि गावों के सीधे–सादे लोगों को रोजगार प्राप्त हो सके। गाधं ी जी आर्थिक आरै राजनैतिक क्षेत्र में विकेंद्रीकरण के समर्थक रहे। वे ग्राम स्वराज द्वारा गामीण विकास के स्वप्न को साकार करना चाहते हैद्य भारत की अस्सी प्रतिशत ग्रामीण जनता कृषि आधारित जीवन व्यतीत करती है इसलिए उन्होंने 'गाँवों की ओर लौटो का नारा दिया। गांधी जी का हर कार्य और उपाय भारत की

गरीबी हटाने तथा हर आँख का आँसू पोंछने पर केंद्रित रहा। उनका कथन है असली स्वराज कछु लोगों द्वारा सत्ता प्राप्त करने से नहीं आएगा बल्कि यह सभी के द्वारा इसकी क्षमता हासिल कर लेने से ही आएगा। गांधी जी की दृष्टि में वास्तविक भारत गांवों में बसता है। गांवों में रह रहे करोड़ों लोगों का जीवन –स्तर सुधारने के उद्देश्य से ही उन्होंने स्वराज्य दृ प्राप्ति का बीड़ा उठाया। गांधी जी ने खेतों में काम करने वाले कृषि मजदूरों,कारीगरों तथा उपेक्षित गाँव वासियों की दशा सुधारने के लिए विभिन्न कुटीर उद्योगों तथा आर्थिक कार्यक्रमे को बढ़ावा देने की बात कही। गांधी जी का आर्थिक उत्थान पर आधारित चिंतन उनके शब्दों में स्वतंत्राता नीचे से प्रारंभ होनी चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक गाँव का एक गणराज्य अथवा पंचायत का राज्य होगा। उसके पास पूरी सत्ता और ताकत होगी। इसके लिए प्रत्येक गाँव आत्मनिर्भर होना होगा। अपनी आवश्यकताएँ स्वयं पूरी करनी होंगी ताकि वह अपना पूरा प्रबंध स्वयं कर सके। स्वदेशी और ग्रामोद्योग गांधी जी की आर्थिक क्रांति के ध्वज थे। उनका कथन है आर्थिक विकास के लिए प्रकृति में निहित जीवन के नियमों का पालन करना चाहिए। यह पृथ्वी प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है लेकिन मनुष्य के लोभ को नहीं। वे गांवों को आत्मनिर्भर बनाना चाहते हैं। ग्राम इकाई को भी वह सर्वांग रुपेण स्वावलंबी बनाना चाहते हैं। सभी ग्रामवासी घरेलू धंधों कुटीर उद्योगों द्वारा तथा विकेंद्रित उद्योगों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उत्पादन कर सके और स्वावलबी जीवनयापन करें। वह व्यक्ति और ग्राम को संयोजित कर देते हैं। इस प्रकार गांधी जी का अर्थव्यवस्था संबंधी चिंतन व्यक्ति से समाज समाज से गाँव गाँव से नगर नगर से देश तक को स्वावलंबन शारीरिक श्रम तथा एकता के सूत्रा में जोड़ देता है गांधी जी ने जीवन के प्रत्येक पहलू पर विचार किया। उनका अर्थशास्त्रा सीधे देश की मिट्टी और सादगी से जुड़ा था। पाश्चात्य भोगवाद का उन्होंने विरोध किया। यदि मनुष्य को जीने के लिए जितना अन्न चाहिए में ही वह संतोष कर ले तो विश्व में कोई भी भूखा न मरे। अन्नम् रक्षति रक्षितः। जलम् रक्षति रक्षितः।। यह गांधीजी का सूत्रा था । इस पृथ्वी में सभी प्राणियों की आवश्यकता पूर्ति करने के लिए पर्याप्त साधन है किंतु लालसाएँ पूरी करने के लिए नहीं द्य गांधी जी ने कहा था सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य की लालसाएँ बढ़ती ही जा रही हैं। गांधी जी स्वदेशी के बड़े हिमायती थे। गांधी जी स्वदेश में उपलब्ध वस्तुओं के उपयोग के हिमायती थे।

निष्कर्ष

गाँधीजी सभी लोगों का कल्याण चाहते थे तथा वे एक ऐसे आर्थिक समाज के पक्षधर थे जो बिना आर्थिक विषमता का हो द्य वैश्विक समाज के निर्माण के साथ ही संप्रभु राष्ट्रों को न सिर्फ राजनैतिक एवं सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से बल्कि औद्योगिकीकरण के साथ ही वर्ग संघर्ष एवं पर्यावरणीय समस्या से भी रूबरू होना पड़ेगा, जो समय के साथ सत्य सिद्ध हुआ। साम्यवादी रूस के पतन के साथ ही वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पूंजीवादी विचारधारा का प्रभुत्व हो गया परंतु वालस्ट्रीट संकट ने एक बार फिर गांधीवाद को प्रासंगिक बना दिया हैद्य डब्ल्यूटीओ में विकसित एवं विकासशील देशों के मध्य कृ षि सब्सिडी को लेकर चल रही गर्मागर्म बहस, किसानों के हित रक्षा संबंधी गांधीजी के विचारों की प्रासंगिकता को रखांकित करता है। गांधी जीवन दृष्टि या कहें भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि ही आज के जीवन में– सुख, शांति और समृद्धि ला सकती है। इस दृष्टि से, गांधी दृष्टि आज अधिक प्रांसगिक है। वर्तमान में अध्यात्मक ,धर्म ,राजनीति, चिकित्सा, खानपान, पत्रकारिता, आदि हर क्षेत्र में महात्मा गाँधी का योगदान अवश्य हैद्य

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गाँधी एंड रिलीजन (बी.आर. नंदा) प्रकाशक–गाँधी स्मृति और दर्शन समिति 1990*
2. *कल्याण (हिंदी मासिक) अक्टूम्बर 1945 प्रकाशन गोरखपुर*
3. *हरिजन 24 फरवरी 1946*
4. *यंग इंडिया 29 सितंबर 1921 (साप्ताहिक पत्र)*
5. *हिंद स्वराज पृष्ठ 153 – 154*
6. *श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय 3 श्लोक 12*
7. *सम्पूर्ण गाँधी वांग्मय, खंड 25,प्रकाशन वर्ष 1967 (भारत सरकार का प्रकाशन)*
8. *हरिजन 27 जनवरी 1940*
9. *हिंद स्वराज पृष्ठ 148*
10. *क्रिशिचयन मिशन्स रूदेयर प्लेस इन इंडिया (1941 का संस्करण)*
11. *बापू की झाकियां पेज–98 (पुस्तक–काका कालेलकर)*
12. *बहुरूपी गाँधी लेखक–अनु बंद्योपाध्याय,पृष्ठ 59*